नमो-नमो दुर्गे सुख करनी। नमो-नमो दुर्गे दुःख हरणी।।

मंगलवार, 11 अगस्त, 2026 ।

वर्ष 19 । अंक 117 । पृष्ठ 4 ।

आरएनआई नंबर : RAJHIN/2007/20298

व्हाट्स एप नंबर : 85291-15101

Email : berisgnr@gmail.com

website: www.sandhyadep.world

सॉंध्यदीप

We Fight For Human Rights

स्कूली छात्र की करंट लगने से मौत, विद्यालय संचालक पर मुकदमा

श्रीगंगानगर। राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले में एक स्कूली छात्र की करंट लगने से मौत हो गयी। वह हादसे के समय पानी पीने के लिए गया था।

पुलिस के अनुसार 9 वर्षीय बालक दिवांश बाल भारती स्कूल में पढ़ाई कर रहा था और सोमवार को वह स्कूल समय के बाद खेलने के लिए गया था। खेल के दौरान प्यास लगी तो वह विद्यालय में ही लगे वाटर कूलर से पानी पी रहा था कि उसको करंट का झटका लगा। यह झटका इतना बड़ा था कि वह क्षण भर में ही अचेत होकर गिर गया था। जब उसको संभाला गया तो वह बेहोश था और उसको तुरंत अस्पताल ले जाया गया। वहां पर उसकी मौत हो गयी।

इस संबंध में दिवांश के पिता भूपेन्द्र मेहरा निवासी वार्ड नं. 23 सादुलशहर की रिपोर्ट के आधार पर स्कूल प्रबंधक सर्वजीत सिंह सरां तथा प्रबंध कमेटी के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है।

वहीं घटना के बाद से ही नगरपालिका के पूर्व अध्यक्ष प्रदीप खीचड़ के नेतृत्व में सोमवार शाम से ही धरना दिया जा रहा है। आज प्रात: पुलिस और धरनार्थियों के बीच वार्ता हुई। इसमें तुरंत प्रभाव से मुकदमा दर्ज करने और मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम करवाने आदि की मांग रखी गयी। पुलिस ने दोनों मांगों को स्वीकार कर लिया है। पुलिस का कहना है कि मेडिकल बोर्ड गठित किया गया है और नामजद मुकदमा भी दर्ज कर लिया गया है।

शिवालयों में उमड़ी आस्था की भीड़

सुबह से मंदिरों में लगी कतारें, हर-हर महादेव के जयघोष से गूंजा शहर

श्रीगंगानगर। सावन माह की शिवरात्रि के अवसर पर मंगलवार को श्रीगंगानगर शहर भगवान शिव की भक्ति में डूबा नजर आया। सुबह होते ही शहर के प्रमुख शिव मंदिरों में श्रद्धालुओं का पहुंचना शुरू हो गया। भगवान शिव के दर्शन, जलाभिषेक और पूजा-अर्चना के लिए श्रद्धालुओं की लंबी कतारें लग गईं। दिन चढ़ने के साथ मंदिरों में भीड़ लगातार बढ़ती गई और कई स्थानों पर श्रद्धालु अपनी बारी का इंतजार करते हुए कतारों में खड़े दिखाई दिए। शिवरात्रि को लेकर श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह देखने को मिला। बड़ी संख्या में लोग परिवार के साथ शिवालयों में पहुंचे। श्रद्धालुओं ने भगवान शिव को जल, दूध और पुष्प अर्पित कर पूजा-अर्चना की तथा परिवार की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की। मंदिरों में सुबह से ही पूजा-पाठ और धार्मिक गतिविधियों का दौर चलता रहा।

प्राचीन शिवालय में लगी लंबी कतारें

शहर के कोड़ा चौक के पास स्थित प्राचीन शिवालय में सुबह से ही श्रद्धालुओं की भीड़ जुटनी शुरू हो गई थी। मंदिर में भगवान शिव के दर्शन और पूजा-अर्चना के लिए भक्तों की लंबी कतारें लगी रहीं। श्रद्धालु कतार में खड़े होकर अपनी बारी का इंतजार करते नजर आए।

जैसे-जैसे दिन आगे बढ़ा, मंदिर में श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ती गई। कई श्रद्धालुओं ने भगवान शिव का जलाभिषेक किया और पूजा-अर्चना के बाद प्रसाद ग्रहण किया। मंदिर परिसर में पूरे दिन भक्तिमय वातावरण बना रहा।

अंध विद्यालय में शिवलिंग पर किया पूजन

इसी प्रकार अंध विद्यालय परिसर में स्थापित शिवलिंग पर भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे। भक्तों ने शिवलिंग की पूजा-अर्चना की और भगवान शिव को जल अर्पित किया। यहां भी सुबह से श्रद्धालुओं के आने का सिलसिला जारी रहा।

श्रद्धालुओं के बीच भगवान शिव के प्रति गहरी आस्था दिखाई दी। महिलाएं, पुरुष और बच्चे परिवार के साथ मंदिरों में पहुंचे और धार्मिक अनुष्ठानों में हिस्सा लिया।

शिव लंगर समिति में भी उमड़ी भीड़

शिव लंगर समिति में भी शिवरात्रि के अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने पहुंचकर भगवान शिव के दर्शन किए। यहां दिनभर भक्तों की आवाजाही बनी रही। श्रद्धालुओं के लिए लंगर की व्यवस्था भी की गई, जिसमें लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया।शहर के विभिन्न शिवालयों में शिवरात्रि के अवसर पर धार्मिक वातावरण बना रहा। मंदिरों में भगवान शिव के जयकारों से माहौल भक्तिमय हो गया। श्रद्धालु 'हर-हर महादेव' और 'बम-बम भोले' के जयघोष करते हुए नजर आए।

दिनभर चलता रहा दर्शन और पूजा का सिलसिला

शिवरात्रि के अवसर पर श्रद्धालुओं ने अपनी श्रद्धा के अनुसार भगवान शिव की पूजा-अर्चना की। कई भक्त सुबह जल्दी मंदिर पहुंचे, जबकि दिन बढ़ने के साथ भी मंदिरों में श्रद्धालुओं का पहुंचना जारी रहा।

शहर के प्रमुख शिवालयों के आसपास भी दिनभर चहल-पहल बनी रही।

मंदिरों में उमड़ी भीड़ से साफ नजर आया कि सावन की शिवरात्रि को लेकर लोगों में गहरी आस्था और उत्साह है। श्रद्धालुओं ने भगवान शिव से परिवार और समाज की सुख-शांति की कामना की।

अमेरिका ने अपराध और राष्ट्रीय सुरक्षा चिंताओं का हवाला देते हुए 1.75 लाख से अधिक वीजा रद्द

वाशिंगटन। अमेरिका ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के मौजूदा कार्यकाल में अब तक 1.75 लाख से अधिक वीजा रद्द किए हैं। अमेरिकी विदेश मंत्रालय के अनुसार, इन वीजा को आपराधिक गतिविधियों, धोखाधड़ी, आव्रजन नियमों के उल्लंघन, हिंसा के आह्वान और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी चिंताओं के आधार पर रद्द किया गया है।

विदेश मंत्रालय ने मंगलवार को जारी बयान में कहा कि ट्रंप प्रशासन ने ऐसे विदेशी नागरिकों के खिलाफ कार्रवाई की है, जिन्होंने अपने वीजा की शर्तों का उल्लंघन किया या अमेरिकी कानूनों का उल्लंघन किया।

मंत्रालय के मुताबिक, रद्द किए गए वीजा में ऐसे विदेशी नागरिकों के मामले शामिल हैं जिन्होंने अपराध किए, अमेरिकी नागरिकों के खिलाफ हिंसा का आह्वान किया, अमेरिकियों के साथ धोखाधड़ी की या अमेरिकी आव्रजन व्यवस्था का दुरुपयोग किया।

अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने राष्ट्रीय सुरक्षा को भी वीजा रद्द करने की कार्रवाई का एक प्रमुख आधार बताया है। मंत्रालय का कहना है कि अमेरिका ऐसे विदेशी नागरिकों को देश में रहने या प्रवेश की अनुमति नहीं देना चाहता, जिनकी गतिविधियां अमेरिकी नागरिकों की सुरक्षा या देश की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बन सकती हैं।

अमेरिकी प्रशासन की इस कार्रवाई को ट्रंप सरकार की कड़ी आव्रजन नीति का हिस्सा माना जा रहा है। ट्रंप प्रशासन अवैध आव्रजन के साथ-साथ वीजा नियमों के उल्लंघन और विदेशी नागरिकों की संदिग्ध गतिविधियों पर भी सख्ती बरत रहा है।

विदेश मंत्रालय ने कहा कि 1.75 लाख से अधिक वीजा रद्द करने की कार्रवाई राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के कार्यकाल के दौरान की गई है। हालांकि, मंत्रालय के बयान में अलग-अलग देशों के नागरिकों के कितने वीजा रद्द किए गए, इसका विस्तृत देशवार आंकड़ा तत्काल उपलब्ध नहीं कराया गया है।

अमेरिकी प्रशासन का कहना है कि वीजा अमेरिका में प्रवेश का अधिकार नहीं बल्कि निर्धारित शर्तों के तहत यात्रा की अनुमति है। यदि कोई विदेशी नागरिक इन शर्तों का उल्लंघन करता है या सुरक्षा एवं कानून-व्यवस्था से जुड़ी गंभीर चिंताएं सामने आती हैं, तो उसका वीजा रद्द किया जा सकता है।

दिव्यांगजन उपनगरीय और साधारण यात्री ट्रेनों के चिह्नित डिब्बों में कर सकेंगे यात्रा

पंचकूला। रेलवे बोर्ड ने स्पष्ट किया है कि वैध विशिष्ट दिव्यांगता पहचान पत्र (यूडीआईडी कार्ड) रखने वाले दिव्यांगजन उपनगरीय खंडों पर चलने वाली ट्रेनों और साधारण यात्री ट्रेनों में दिव्यांगजनों के लिए चिह्नित अनारक्षित सवारी डिब्बों में यात्रा कर सकेंगे, भले ही उन्हें रेलवे की ओर से किराये में रियायत की सुविधा नहीं दी गई हो।

रेलवे बोर्ड ने कहा कि वर्ष 2026 के वाणिज्य परिपत्र संख्या 11 के तहत पहले वैध यूडीआईडी कार्ड और यात्रा के लिए वैध प्राधिकार रखने वाले दिव्यांगजनों के सामान्य मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों के एसएलआरडी/एलएसएलआरडी सवारी डिब्बों में यात्रा करने के संबंध में स्पष्टीकरण जारी किया गया था। अब जारी परिशिष्ट में उपनगरीय खंडों पर चलने वाली ट्रेनों और साधारण यात्री ट्रेनों के संबंध में स्थिति स्पष्ट की गई है।

नए निर्देशों के तहत दिव्यांग जनों की दो श्रेणियों को इन चिह्नित डिब्बों में यात्रा के लिए वैध यात्री माना जाएगा। पहली श्रेणी में वे दिव्यांगजन शामिल हैं, जिन्हें मौजूद दिशा-निर्देशों के अनुसार रियायती किराए की सुविधा दी गई है और जिनके पास निर्धारित प्रारूप में रियायत प्रमाणपत्र या भारतीय रेल द्वारा जारी रेल दिव्यांगजन कार्ड है।

दूसरी श्रेणी में वे दिव्यांगजन शामिल हैं, जिनके पास दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा जारी वैध यूडीआईडी कार्ड है, लेकिन जिन्हें रेलवे की ओर से रियायती किराए की सुविधा नहीं दी गई है। ऐसे यात्रियों को भी दिव्यांगजनों के लिए चिह्नित डिब्बों में यात्रा के लिए वैध यात्री माना जाएगा।

रेलवे बोर्ड ने स्पष्ट किया है कि दोनों श्रेणियों के दिव्यांग यात्रियों को वैध पहचान प्रमाण के रूप में, जैसा लागू हो, यूडीआईडी कार्ड, रेल दिव्यांगजन कार्ड या निर्धारित प्रारूप में रियायत प्रमाणपत्र अपने साथ रखना होगा। इसके साथ ही यात्रा करने के लिए वैध प्राधिकार, जैसे यात्रा टिकट या सीजन टिकट, रखना भी जरूरी होगा। रेलवे बोर्ड ने यह भी स्पष्ट किया है कि दिव्यांगजनों के लिए चिह्नित इन डिब्बों में यात्रा के लिए अधिकृत नहीं होने के बावजूद यदि कोई अन्य यात्री इनमें यात्रा करते पाया जाता है तो उसके खिलाफ रेल अधिनियम, 1989 के प्रावधानों के अनुसार कार्रवाई की जाएगी।

रेलवे बोर्ड ने विशेष रूप से दोहराया है कि दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा जारी वैध यूडीआईडी कार्ड धारक दिव्यांगजनों को चिह्नित डिब्बों में यात्रा की अनुमति देने का अर्थ उन्हें रेल किराये में रियायत देना नहीं है।

जिन यूडीआईडी कार्ड धारकों को रेलवे की रियायती किराया सुविधा प्राप्त नहीं है, उन्हें ट्रेन में चढ़ने से पहले निर्धारित किराया चुकाकर यात्रा के लिए वैध टिकट अथवा अन्य वैध प्राधिकार लेना होगा।

जेपीएससी-जेएसएससी आंदोलन पर लाठीचार्ज के विरोध में झारखंड बंद

रांची। झारखंड में जेपीएससी और जेएसएससी की परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं को लेकर आंदोलन कर रहे छात्रों पर सोमवार को हुए लाठीचार्ज के विरोध में भारतीय जनता पार्टी ने मंगलवार को झारखंड बंद का आह्वान किया है।

भाजपा के बंद का असर आज राजधानी रांची की सड़कों पर भी देखने को मिल रहा है। हरमू चौक पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने टायर जलाकर सड़क जाम कर दिया। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और छात्रों पर हुई पुलिस कार्रवाई का विरोध किया। सड़क जाम होने के कारण इलाके में यातायात भी प्रभावित हुआ।

बंदी के कारण आम दिनों की तुलना में रांची में बसों और अन्य यात्री वाहनों का परिचालन कम दिखाई दे रहा है। रांची से बाहर जाने और राजधानी में आने वाले यात्रियों की संख्या में भी कमी देखी गई है। कई मार्गों पर सड़कों पर सामान्य दिनों की अपेक्षा कम चहल-पहल नजर आ रही है।

बंद को देखते हुए राजधानी रांची के सभी निजी स्कूलों को भी मंगलवार को बंद रखा गया है। स्कूल प्रबंधन की ओर से विद्यार्थियों की सुरक्षा और शहर में उत्पन्न परिस्थितियों को देखते हुए स्कूल बंद रखने का निर्णय लिया गया है।

ज्ञातव्य है कि जेपीएससी और जेएसएससी की प्रतियोगी परीक्षाओं में कथित अनियमितता, पेपर लीक और भर्ती प्रक्रिया की पारदर्शिता को लेकर छात्र लंबे समय से आंदोलन कर रहे हैं। सोमवार को छात्रों ने विधानसभा घेराव का प्रयास किया था। प्रदर्शनकारियों को रोकने के दौरान पुलिस ने वाटर कैनन, आंसू गैस और लाठीचार्ज का इस्तेमाल किया था। जिसके बाद कई छात्रों को चोट लगी थी। इसके बाद भाजपा ने छात्रों के समर्थन में 11 अगस्त को पूरे झारखंड में बंद का आह्वान किया।

भाजपा ने पुलिस कार्रवाई को लेकर राज्य सरकार पर निशाना साधते हुए छात्रों की मांगों पर गंभीरता से विचार करने की मांग की है।

वहीं, बंद के दौरान प्रशासन की ओर से कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए सुरक्षा व्यवस्था बढ़ाई गई है। राजधानी में बंद के असर के बीच लोगों को आवागमन में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

180 से ज्यादा आरएएस अधिकारियों के तबादले, फिर भी श्रीगंगानगर यूआईटी को नहीं मिला सचिव

एडीएम सतर्कता का पद भी रिक्त, प्रशासनिक कामकाज पर पड़ रहा असर; सहायक कलक्टर स्वाति गुप्ता को शुगर मिल के महाप्रबंधक की जिम्मेदारी

श्रीगंगानगर। राज्य सरकार ने राजस्थान प्रशासनिक सेवा (आरएएस) के 180 से अधिक अधिकारियों के तबादले एवं पदस्थापन किए हैं, लेकिन श्रीगंगानगर जिले में लंबे समय से रिक्त चल रहे महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों को इस बार भी नहीं भरा गया। नगर विकास न्यास (यूआईटी) में सचिव तथा एडीएम सतर्कता के पद पर किसी अधिकारी की नियुक्ति नहीं होने से प्रशासनिक व्यवस्था को लेकर सवाल उठ रहे हैं। राज्य सरकार की ओर से जारी तबादला सूची में प्रदेश के विभिन्न जिलों में आरएएस अधिकारियों को नई जिम्मेदारियां दी गई हैं। उम्मीद की जा रही थी कि श्रीगंगानगर में रिक्त महत्वपूर्ण पदों पर भी अधिकारियों की नियुक्ति होगी, लेकिन तबादला सूची सामने आने के बाद स्थानीय स्तर पर एक बार फिर निराशा सामने आई है।

यूआईटी में सचिव का पद खाली

श्रीगंगानगर नगर विकास न्यास जिले के महत्वपूर्ण संस्थानों में शामिल है। शहर में विकास कार्यों, आवासीय योजनाओं, भूमि संबंधी मामलों और विभिन्न प्रशासनिक प्रक्रियाओं में यूआईटी की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इसके बावजूद यूआईटी सचिव का पद रिक्त रखा गया है।

सचिव का पद लंबे समय से खाली होने के कारण यूआईटी से जुड़े कई मामलों में निर्णय प्रक्रिया प्रभावित होने की बात सामने आ रही है। शहर में विकास योजनाओं और लंबित प्रकरणों को लेकर भी लगातार सवाल उठते रहे हैं। ऐसे में आरएएस अधिकारी की नियुक्ति नहीं होने से यूआईटी के कामकाज को लेकर स्थिति और महत्वपूर्ण हो गयी है।

एडीएम सतर्कता का पद भी नहीं भरा

तबादला सूची में श्रीगंगानगर के एडीएम सतर्कता के रिक्त पद पर भी नियुक्ति नहीं की गयी है। प्रशासनिक व्यवस्था में सतर्कता संबंधी कार्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ऐसे में इस पद के रिक्त रहने से संबंधित मामलों के प्रभावी संचालन को लेकर भी चर्चा बनी हुई है।

तबादला सूची में श्रीगंगानगर में कार्यरत सहायक कलक्टर स्वाति गुप्ता का भी पदस्थापन किया गया है। उन्हें श्रीगंगानगर शुगर मिल के महाप्रबंधक की जिम्मेदारी दी गयी है। उनके स्थानांतरण के बाद सहायक कलक्टर के पद पर भी प्रशासनिक जिम्मेदारी में बदलाव होगा। श्रीगंगानगर शुगर मिल जिले की महत्वपूर्ण औद्योगिक संस्थाओं में से एक है। ऐसे में स्वाति गुप्ता की नई जिम्मेदारी को भी प्रशासनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

बिजयनगर और अनूपगढ़ में नये एसडीएम

राज्य सरकार ने बिजयनगर तथा अनूपगढ़ के उपखण्ड अधिकारी पदों पर भी नयी नियुक्तियां की हैं। इससे दोनों उपखण्डों में प्रशासनिक कामकाज को नयी गति मिलने की उम्मीद है।

हालांकि, श्रीगंगानगर के महत्वपूर्ण रिक्त पदों पर नियुक्ति नहीं होने के कारण स्थानीय प्रशासनिक हलकों में यह सवाल बना हुआ है कि आखिर यूआईटी सचिव और एडीएम सतर्कता जैसे महत्वपूर्ण पदों को कब भरा जाएगा।

लगातार टल रही नियुक्तियां

श्रीगंगानगर में आरएएस अधिकारियों के रिक्त पदों पर नियुक्ति का मामला लंबे समय से चर्चा में है। राज्य सरकार द्वारा बड़े स्तर पर तबादले किए जाने के बावजूद जिले के इन महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्ति नहीं होने से प्रशासनिक कामकाज को लेकर चिंता बनी हुई है। अब देखना होगा कि सरकार अगली प्रशासनिक सूची में इन दोनों पदों पर अधिकारियों की नियुक्ति करती है या नहीं।

नगर विकास न्यास के सचिव असीजा को निलम्बित करते हुए पदस्थापन की प्रतीक्षा में रखा गया था। इसके उपरांत जिला कलक्टर ने जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी को अतिरिक्त जिम्मेदारी दी थी।

संपादकीय | आस्था के साथ नागरिक जिम्मेदारी का सवाल...

भारत आस्थाओं का देश है। यहां कांवड़ यात्रा भी निकलती है, अज़ान भी होती है, मंदिरों में जागरण भी होते हैं, गुरुद्वारों में कीर्तन भी और चर्चों में प्रार्थनाएं भी। इन सभी को संविधान ने धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार दिया है। लेकिन क्या धार्मिक स्वतंत्रता का मतलब यह भी है कि आम नागरिक की दिनचर्या, शिक्षा, स्वास्थ्य और आवाजाही प्रभावित हो? हर साल लाखों श्रद्धालु कांवड़ यात्रा में शामिल होते हैं। यह उनकी आस्था का विषय है और उसका सम्मान होना भी चाहिए। लेकिन दूसरी तरफ तस्वीर यह भी है कि कई शहरों में घंटों ट्रैफिक जाम लगता है, स्कूल बंद कर ऑनलाइन पढ़ाई करानी पड़ती है, मरीजों और एंबुलेंस तक को रास्ता बनाने में कठिनाई होती है। कई जगह डीजे, सड़क पर नाच-गाना, स्टंट और सोशल मीडिया के लिए प्रदर्शन जैसी तस्वीरें भी सामने आती हैं। तब मन में कई सवाल उठते हैं- क्या यही भक्ति है? यह कौन सा तरीका है अपने आराध्य को प्रसन्न करने का? क्या ऐसे व्यवहार को धर्मिक आस्था का हिस्सा माना जाना चाहिए? इसी तरह सालों से सुबह-सुबह मस्जिदों के लाउडस्पीकर पर होने वाली अज़ान को लेकर भी बहस होती रही है। कुछ लोगों को इससे परेशानी होती है तो कई जगह मंदिरों के जागरण, धार्मिक जुलूसों और अन्य आयोजनों में भी तेज़ आवाज़ वाले लाउडस्पीकर लोगों की नींद, पढ़ाई और रोज़मर्रा की ज़िंदगी को प्रभावित करते हैं। अगर हम सच में निष्पक्ष हैं तो हमें एक ही सिद्धांत अपनाना होगा- नियम सबके लिए समान होने चाहिए। किसी एक धर्म पर सवाल और दूसरे पर चुप्पी या एक के लिए छूट और दूसरे के लिए सख्ती- यह न्याय नहीं हो सकता। भारतीय

संविधान का अनुच्छेद 25 सभी नागरिकों को अपने धर्म का पालन और प्रचार करने की स्वतंत्रता देता है। लेकिन यह अधिकार पूर्ण नहीं है। यह सार्वजनिक व्यवस्था , नैतिकता और स्वास्थ्य के अधीन है। यानी धार्मिक स्वतंत्रता के साथ नागरिक जिम्मेदारी भी जुड़ी हुई है। इसी सोच को सर्वोच्च न्यायालय ने भी अपने 2005 के शोर प्रदूषण फैसले में रेखांकित किया। सर्वोच्च अदालत ने स्पष्ट किया था कि लाउडस्पीकर किसी धर्म का अनिवार्य हिस्सा नहीं हैं और ध्वनि-प्रदूषण के नियम सभी पर समान रूप से लागू होंगे। अदालत ने यह भी कहा कि किसी भी धर्म या आयोजन को शोर संबंधी नियमों से छूट नहीं दी जा सकती और ध्वनि प्रदूषण नागरिकों के जीवन और स्वास्थ्य के अधिकार को प्रभावित करता है। इसलिए बहस कांवड़ यात्रा बनाम अज़ान की नहीं है। बहस यह है कि क्या आस्था का प्रदर्शन इस तरह होना चाहिए जिससे बाकी नागरिकों को अनावश्यक परेशानी हो?

क्या प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं है कि धार्मिक आयोजनों के लिए बेहतर ट्रैफिक प्लान, वैकल्पिक मार्ग और शोर नियंत्रण सुनिश्चित करे? और क्या श्रद्धालुओं की जिम्मेदारी नहीं है कि वे अपनी भक्ति को अनुशासन और संवेदनशीलता के साथ निभाएं? सच्ची आस्था कभी दूसरों की परेशानी पर खड़ी नहीं होती। वह संयम सिखाती है, सेवा सिखाती है और सह-अस्तित्व का भाव सिखाती है। अगर हमारी भक्ति से किसी बच्चे की पढ़ाई में रुकावट हो, किसी मरीज की एंबुलेंस जाम में फंस जाए या किसी बुजुर्ग की नींद टूट जाए तो हमें कम से कम यह सवाल ज़रूर पूछना चाहिए कि कहीं हम आस्था और प्रदर्शन के बीच की रेखा तो नहीं भूल रहे। धर्म सबका अपना है लेकिन सड़क, कानून और सार्वजनिक व्यवस्था सबकी है। इसलिए नियम भी सबके लिए समान होने चाहिए- चाहे कांवड़ यात्रा हो, अज़ान हो, मंदिर का जागरण हो या कोई अन्य धार्मिक आयोजन। यही संविधान की भावना है और यही एक सभ्य समाज की पहचान भी।

जुगनुओं की घटती संख्या और इसके पीछे के मुख्य कारण

अभिषेक कुमार सिंह

विकास की मीनारें बनाते शहरों ने साफ आबोहवा के साथ जो कुछ खोया है, उनमें प्रकृति और अंधेरों के सहचर जुगनुओं की कतारें भी हैं- जो अब विरले ही दिखती हैं. एक दौर था, जब बरसात की रातें सिर्फ बारिशों की नहीं होती थीं. वे टिमटिमाती रोशनियों की भी होती थीं. खेतों की मेड़, गांव की पगडंडी, नदी किनारे की झाड़ियां और पेड़ों की छाया में अनगिनत जुगनू ऐसे चमकते थे मानो धरती ने आसमान के तारों को उधार ले लिया हो. आज ये नजारे कहानी बन चुके हैं. क्यों हुआ ऐसा? एक बड़ी वजह है कि हमारी आज की दुनिया कृत्रिम रोशनियों से भर गई. इंटरनेट और सोशल मीडिया के साथ पैदा हुई शहरी पीढ़ी ने इस कारण शायद ही कभी खुले आकाश के नीचे हजारों जुगनुओं को एक साथ चमकते देखा हो. वैज्ञानिक वर्षों से कहते रहे हैं कि जैव विविधता का क्षरण हमेशा बड़े जीवों से शुरू नहीं होता. सबसे पहले छोटे जीव गायब होते हैं. वे जीव जिन्हें सामान्यत: मनुष्य देखता भी नहीं. लेकिन वही प्रकृति की सबसे महत्वपूर्ण कड़ियां होते हैं. जुगनू उन्हीं में से एक हैं. यह विडंबना ही है कि जिस रोशनी को हम सभ्यता का प्रतीक मानते हैं, वही किसी दूसरी प्रजाति के अस्तित्व का सबसे बड़ा खतरा बन सकती है. वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण पर वर्षों से चर्चा होती रही है लेकिन प्रकाश प्रदूषण अभी भी सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा नहीं बन पाया है. असल में, रात का अंधेरा केवल अनुपस्थित प्रकाश नहीं है. वह प्रकृति की जैविक घड़ी का अनिवार्य हिस्सा है. पक्षियों के प्रवास, पतंगों की उड़ान, चमगादड़ों के शिकार, अनेक पौधों के फूलने और जुगनुओं के जीवन चक्र – सबका संबंध प्राकृतिक अंधकार से है. शायद यही वजह है कि दुनिया के अनेक देशों में अब 'डार्क स्काई' यानी अंधेरी रातों के संरक्षण को पर्यावरण नीति का हिस्सा बनाया जा रहा है. अमेरिका, यूरोप और जापान में ऐसे क्षेत्र विकसित किए जा रहे हैं जहां अनावश्यक कृत्रिम प्रकाश सीमित रखा जाता है. उद्देश्य केवल तारों को देखना नहीं, बल्कि उन जीवों को बचाना भी है जिनका जीवन अंधेरे पर निर्भर है. भारत में अभी यह सोच प्रारंभिक अवस्था में है. अब जरा यह सोचें कि आखिर जुगनू हमें क्या बताते हैं? पर्यावरण वैज्ञानिक जुगनुओं को स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र का संकेतक मानते हैं. जहां मिट्टी में पर्याप्त नमी होती है, जल स्रोत अपेक्षाकृत स्वच्छ होते हैं, रासायनिक प्रदूषण कम होता है और जैव विविधता सुरक्षित रहती है, वहां जुगनू अधिक दिखाई देते हैं. इस दृष्टि से देखें तो जुगनुओं की घटती संख्या हमें प्रकृति का एक रिपोर्ट कार्ड दिखाती है. यदि किसी इलाके से जुगनू गायब हो रहे हैं, तो इसका अर्थ केवल इतना नहीं कि वहां एक सुंदर दृश्य कम हो गया. इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि मिट्टी की गुणवत्ता बदल रही है, कीटनाशकों का प्रभाव बढ़ रहा है, प्राकृतिक आवास सिकुड़ रहे हैं और जलवायु परिवर्तन स्थानीय स्तर पर असर दिखाने लगा है. हरित क्रांति ने भारत को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाया, लेकिन रासायनिक कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग ने अनेक लाभकारी कीटों की आबादी को भी प्रभावित किया. जुगनुओं के अंडे, लार्वा और उनके भोजन स्रोत इस बदलाव से अछूते नहीं रहे. जलवायु परिवर्तन या कहें कि मौसम का बदलता स्वरूप भी उनके जीवन चक्र पर प्रभाव डाल रहा है. अनियमित मानसून, लंबे शुष्क दौर, अत्यधिक तापमान और अचानक होने वाली भारी वर्षा उनके प्रजनन को प्रभावित करती है.

आज का कार्टून

उन्नत बचपन की पहली शर्त- स्वस्थ भोजन, स्वस्थ भविष्य

ललित गर्ग

> बचपन की सबसे बड़ी आवश्यकता स्वाद नहीं, पोषण है। शरीर के विकास के साथ-साथ मस्तिष्क का तीव्र विकास भी बचपन में ही होता है। यदि इस अवस्था में बच्चों को संतुलित भोजन, ताजे फल, हरी सब्जियां, दूध, दालें, मोटे अनाज और प्राकृतिक खाद्य पदार्थ पर्याप्त मात्रा में मिलें, तो उनका शारीरिक और मानसिक विकास कहीं अधिक प्रभावी होता है। इसके विपरीत जंक फूड क्षणिक स्वाद तो देता है, लेकिन शरीर को आवश्यक पोषक तत्व नहीं देता। परिणामस्वरूप बच्चा बाहर से स्वस्थ दिखाई देता है, किंतु भीतर से अनेक पोषण संबंधी कमियों का शिकार बनने लगता है। दुर्भाग्य यह है कि जंक फूड आज केवल भोजन नहीं रहा, बल्कि एक आक्रामक व्यावसायिक संस्कृति बन चुका है। विज्ञापनों के माध्यम से बच्चों के मन में यह धारणा बैठा दी गई है कि आधुनिकता का अर्थ पैकेटबंद भोजन है। लोकप्रिय खिलाड़ी, फिल्मी कलाकार और डिजिटल प्रभावक अनजाने में बच्चों को ऐसे उत्पादों की ओर आकर्षित करते हैं, जिनका अत्यधिक सेवन उनके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

विकसित भारत का स्वप्न केवल आधुनिक इमारतों, तेज अर्थव्यवस्था, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल तकनीक और विश्वस्तरीय आधारभूत संरचनाओं से पूरा नहीं होगा। किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसके बच्चे होते हैं। यदि बचपन स्वस्थ, संस्कारित, ऊर्जावान और मानसिक रूप से सुदृढ़ है, तो राष्ट्र का भविष्य स्वतः सुरक्षित हो जाता है। यदि बचपन ही अस्वस्थ, मोटापे, मधुमेह, कुपोषण और गलत खान-पान की आदतों से घिर जाए, तो विकास की पूरी अवधारणा खोखली सिद्ध होने लगती है। इसलिए बच्चों का स्वास्थ्य केवल स्वास्थ्य मंत्रालय का विषय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय विकास, शिक्षा, अर्थव्यवस्था और सामाजिक उत्तरदायित्व का भी सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है। महाराष्ट्र सरकार द्वारा राज्य के सभी स्कूलों और उनके आसपास जंक फूड की बिक्री, वितरण तथा प्रचार पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय इसी व्यापक दृष्टि का परिचायक है। यह केवल एक प्रशासनिक आदेश नहीं, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के प्रति उत्तरदायित्व का गंभीर संदेश है। यह स्वीकार करने का साहसिक प्रयास है कि बच्चों की सेहत बाजार के मुनाफे से कहीं अधिक मूल्यवान है। यदि यह निर्णय प्रभावी ढंग से लागू होता है तो यह पूरे देश के लिए एक आदर्श मॉडल बन सकता है।

आज सबसे बड़ी चिंता यह नहीं है कि बच्चे भोजन कम खा रहे हैं, बल्कि यह है कि वे पोषण कम और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ अधिक खा रहे हैं। रंग-बिरंगे पैकेट, आकर्षक विज्ञापन, कार्टून पात्रों की ब्रांडिंग, सोशल मीडिया का प्रभाव और हर गली-मोहल्ले में उपलब्ध फास्ट फूड ने बच्चों की स्वादेंद्रियों पर ऐसा कब्जा कर लिया है कि घर का पौष्टिक भोजन उन्हें फीका लगने लगा है। यह परिवर्तन केवल खान-पान की आदत का बदलाव नहीं है, बल्कि धीरे-धीरे उनके शरीर, मस्तिष्क और व्यवहार को भी प्रभावित कर रहा है। वैज्ञानिक शोध लगातार यह बताते रहे हैं कि अधिक वसा, अधिक नमक और अधिक चीनी वाले खाद्य पदार्थ बच्चों में मोटापा, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, हृदय रोग, हार्मोन असंतुलन तथा मानसिक एकाग्रता में कमी जैसी अनेक समस्याओं का कारण बन रहे हैं। सबसे चिंताजनक तथ्य यह है कि जो बीमारियां पहले चालीस-पचास वर्ष की आयु में दिखाई देती थीं, वे अब किशोरावस्था और बचपन में ही दस्तक देने लगी हैं। यह केवल स्वास्थ्य संकट नहीं, बल्कि आने वाले समय में देश की उत्पादक क्षमता और मानव संसाधन पर भी गहरा प्रभाव डालने वाला संकट है।

बचपन की सबसे बड़ी आवश्यकता स्वाद नहीं, पोषण है। शरीर के विकास के साथ-साथ मस्तिष्क का तीव्र विकास भी बचपन में ही होता है। यदि इस अवस्था में बच्चों को संतुलित भोजन, ताजे फल, हरी सब्जियां, दूध, दालें, मोटे अनाज और प्राकृतिक खाद्य पदार्थ पर्याप्त मात्रा में मिलें, तो उनका शारीरिक और मानसिक विकास कहीं अधिक प्रभावी होता है। इसके विपरीत जंक फूड क्षणिक स्वाद तो देता है, लेकिन शरीर को आवश्यक पोषक तत्व नहीं देता। परिणामस्वरूप बच्चा बाहर से स्वस्थ दिखाई देता है, किंतु भीतर से अनेक पोषण संबंधी कमियों का शिकार बनने लगता है। दुर्भाग्य यह है कि जंक फूड आज केवल भोजन नहीं रहा, बल्कि एक आक्रामक व्यावसायिक संस्कृति बन चुका है। विज्ञापनों के माध्यम से बच्चों के मन में यह धारणा बैठा दी गई है कि आधुनिकता का अर्थ पैकेटबंद भोजन है। लोकप्रिय खिलाड़ी, फिल्मी कलाकार और डिजिटल प्रभावक अनजाने में बच्चों को ऐसे उत्पादों की ओर आकर्षित करते हैं, जिनका अत्यधिक सेवन उनके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। ऐसे में केवल परिवारों को दोष देना उचित नहीं होगा। सरकार, उद्योग, विद्यालय, अभिभावक और समाज-सभी को अपनी-अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी।

विद्यालय केवल शिक्षा का केंद्र नहीं, बल्कि जीवनशैली का निर्माण करने वाली प्रयोगशाला भी हैं। यदि स्कूल परिसर में बच्चों को पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया जाए, पोषण शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए, विद्यालयों में रसोई बाग विकसित किए जाएं, बच्चों को स्वयं पौधे लगाने और प्राकृतिक भोजन के महत्व से जोड़ा जाए, तो यह परिवर्तन अधिक स्थायी होगा। केवल प्रतिबंध लगाने से समस्या का समाधान नहीं होगा। स्वस्थ विकल्पों को स्वादिष्ट, आकर्षक और सुलभ बनाना भी उतना ही आवश्यक है। भारत की पारंपरिक भोजन संस्कृति विश्व की सबसे संतुलित और वैज्ञानिक भोजन प्रणालियों में मानी जाती है। बाजरा, ज्वार, रागी, दालें, छाछ, दही, अंकुरित अनाज, मौसमी फल, सब्जियां और घर का ताजा भोजन हमारे पूर्वजों की स्वस्थ जीवनशैली की पहचान रहे हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम आधुनिकता के नाम पर अपनी इस समृद्ध खाद्य संस्कृति को त्यागने के बजाय उसे नए स्वरूप में बच्चों तक पहुंचाएं। यदि विद्यालयों की कैंटीन में स्थानीय और पारंपरिक पौष्टिक व्यंजन उपलब्ध कराए जाएं, तो बच्चे धीरे-धीरे उसी स्वाद के अभ्यस्त हो सकते हैं।

यह भी समझना होगा कि जंक फूड का प्रश्न केवल स्वास्थ्य का नहीं, बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। अस्वस्थ बचपन का अर्थ है भविष्य में स्वास्थ्य सेवाओं पर बढ़ता खर्च, कार्यक्षमता में कमी, उत्पादकता का ह्रास और राष्ट्रीय आय पर प्रतिकूल प्रभाव। आज यदि बच्चों के पोषण पर निवेश किया जाता है तो वह आने वाले दशकों में स्वस्थ, सक्षम और नवाचारी नागरिकों के रूप में अनेक गुना लाभ देता है। इसलिए बच्चों के स्वास्थ्य पर खर्च को व्यय नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का सबसे लाभकारी निवेश माना जाना चाहिए। अभिभावकों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि घर में ही पैकेटबंद स्नैक्स, शीतल पेय और अत्यधिक प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ नियमित रूप से उपलब्ध होंगे, तो बच्चे उनसे दूर नहीं रह पाएंगे। बच्चे वही सीखते हैं जो वे अपने आसपास देखते हैं। यदि परिवार स्वयं संतुलित भोजन करेगा, साथ बैठकर भोजन करने की परंपरा विकसित करेगा और बच्चों को रसोई से जोड़कर भोजन बनाने की प्रक्रिया में सहभागी बनाएगा, तो उनमें स्वस्थ भोजन के प्रति स्वाभाविक रुचि विकसित होगी।

सरकारों को भी केवल स्कूलों तक सीमित न रहकर व्यापक नीति अपनानी होगी। बच्चों को लक्षित करने वाले भ्रामक खाद्य विज्ञापनों पर नियंत्रण, पैकेटबंद खाद्य पदार्थों पर स्पष्ट चेतावनी, अत्यधिक चीनी और नमक वाले उत्पादों की पहचान को सरल बनाना, खेल मैदानों की संख्या बढ़ाना, नियमित स्वास्थ्य परीक्षण, पोषण जागरूकता अभियान तथा स्थानीय स्तर पर सामुदायिक भागीदारी जैसे कदम समान रूप से आवश्यक हैं। यदि स्वास्थ्य और शिक्षा विभाग मिलकर साझा रणनीति बनाएं तो परिणाम कहीं अधिक प्रभावी होंगे। आज समय की मांग है कि जंक फूड के विरुद्ध संघर्ष को केवल प्रतिबंध तक सीमित न रखा जाए, बल्कि इसे स्वस्थ जीवनशैली के राष्ट्रीय अभियान का स्वरूप दिया जाए। जिस प्रकार स्वच्छ भारत अभियान ने स्वच्छता को जन-आंदोलन बनाया, उसी प्रकार स्वस्थ भोजन और पोषण को भी राष्ट्रीय जन-जागरण का विषय बनाया जाना चाहिए। बच्चों को यह समझाना होगा कि वास्तविक ऊर्जा किसी पैकेट में नहीं, बल्कि प्रकृति के निकट रहने वाले भोजन में छिपी है।

महाराष्ट्र सरकार का निर्णय इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उसने यह स्वीकार किया है कि बच्चों का स्वास्थ्य किसी भी राजनीतिक या आर्थिक हित से बड़ा है। अब आवश्यकता इस बात की है कि देश के सभी राज्य इस दिशा में समान साहस और दूरदर्शिता दिखाएं। विकसित भारत की आधारशिला स्मार्ट शहर नहीं, बल्कि स्वस्थ बच्चे हैं। यदि बचपन सुरक्षित रहेगा तो भविष्य सुरक्षित रहेगा। यदि बच्चों की थाली पौष्टिक होगी तो राष्ट्र की प्रगति भी संतुलित होगी। आने वाले भारत की पहचान केवल तकनीकी शक्ति से नहीं, बल्कि स्वस्थ, सशक्त, अनुशासित और जागरूक नई पीढ़ी से होगी। इसलिए आज का सबसे बड़ा राष्ट्रीय संकल्प यही होना चाहिए कि हर बच्चे को ऐसा वातावरण मिले, जहाँ स्वाद से पहले स्वास्थ्य, सुविधा से पहले पोषण और तात्कालिक आकर्षण से पहले दीर्घकालिक जीवन-सुरक्षा को महत्व दिया जाए। यही उन्नत बचपन का मार्ग है और यही विकसित भारत की सबसे मजबूत नींव।

डिजिटल भारत का सपना तभी पूरा होगा, जब हर महिला होगी डिजिटल साक्षर

> भारत के विकसित राष्ट्र बनने का सपना तभी साकार होगा, जब देश की प्रत्येक महिला डिजिटल दुनिया की सक्रिय सहभागी बने। आजीवन शिक्षा इस परिवर्तन की सबसे प्रभावी कुंजी है। सरकार, शैक्षणिक संस्थानों, स्वैच्छिक संगठनों, स्थानीय निकायों और समाज को मिलकर ऐसा वातावरण तैयार करना होगा, जिसमें कोई भी महिला डिजिटल अवसरों से वंचित न रहे। डिजिटल भारत की वास्तविक सफलता इंटरनेट की गति या तकनीक की उन्नति से नहीं, बल्कि इस बात से मापी जाएगी कि देश की अंतिम पंक्ति में खड़ी महिला भी डिजिटल संसाधनों का आत्मविश्वास के साथ उपयोग कर रही है या नहीं।

राजेंद्र जोशी

अगर भारत को विकसित राष्ट्र के लक्ष्य तक पहुंचना है, तो महिलाओं की पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करना अनिवार्य है। देश की जनसंख्या का लगभग आधा हिस्सा महिलाएं हैं। आज विकास का सबसे बड़ा आधार डिजिटल तकनीक बन चुकी है। शिक्षा, बैंकिंग, स्वास्थ्य, सरकारी योजनाओं का लाभ, रोजगार, उद्यमिता और सामाजिक सहभागिता लगभग हर क्षेत्र डिजिटल माध्यमों पर निर्भर होता जा रहा है। ऐसे समय में यदि महिलाओं का बड़ा वर्ग डिजिटल दुनिया से दूर रह जाता है, तो यह केवल लैंगिक असमानता का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय विकास में गंभीर बाधा भी है।

आज भारत डिजिटल क्रांति का नेतृत्व करने का दावा करता है। यूपीआई, डिजिटल भुगतान, ई-गवर्नेंस, ऑनलाइन शिक्षा, टेलीमेडिसिन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी तकनीकों ने नई संभावनाएं खोली हैं। इसके बावजूद डिजिटल सुविधाओं तक महिलाओं की पहुंच पुरुषों की तुलना में कम है। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों, छोटे कस्बों, आदिवासी इलाकों और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की महिलाएं आज भी डिजिटल संसाधनों से पर्याप्त रूप से नहीं जुड़ सकी हैं। यह स्थिति बताती है कि तकनीकी विकास तभी सार्थक होगा, जब उसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति, विशेषकर महिलाओं तक पहुंचे। डिजिटल समावेशन का अर्थ केवल मोबाइल या इंटरनेट उपलब्ध करा देना नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ है महिलाओं को डिजिटल उपकरणों का सुरक्षित, आत्मविश्वासपूर्ण और प्रभावी उपयोग करने में सक्षम बनाना। जब कोई महिला ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करती है, डिजिटल बैंकिंग करती है, सरकारी योजनाओं के लिए स्वयं आवेदन करती है, अपने उत्पादों का ऑनलाइन विपणन करती है या टेलीमेडिसिन के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त करती है, तभी वास्तविक डिजिटल समावेशन संभव होता है।

दरअसल, देश के बहुत सारे परिवारों में मोबाइल फोन पुरुषों की प्राथमिकता होता है और महिलाओं को उसका सीमित उपयोग ही मिल पाता है। एक और बड़ा कारण डिजिटल साक्षरता का अभाव है। पढ़ी-लिखी महिलाएं भी अनेक बार ऑनलाइन सेवाओं का सुरक्षित उपयोग नहीं कर पातीं। फिर सामाजिक मानसिकता की वजह से महिलाओं के मोबाइल उपयोग को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। इसके अलावा, साइबर अपराधों का भय है। ऑनलाइन ठगी, फर्जीवाड़ा और साइबर उत्पीड़न के कारण अनेक महिलाएं डिजिटल माध्यमों से दूरी बनाए रखती हैं।

यहीं आजीवन शिक्षा की अवधारणा अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षा केवल विद्यालय या महाविद्यालय तक सीमित नहीं होनी चाहिए। बदलती तकनीकों के साथ निरंतर सीखते रहना ही आजीवन शिक्षा है। अगर प्रत्येक गांव, वार्ड और समुदाय में महिलाओं के लिए नियमित डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम संचालित किए जाएं, तो लाखों महिलाएं आत्मनिर्भर बन सकती हैं। स्वयं सहायता समूह, पंचायतें, महिला मंडल, पुस्तकालय, जन शिक्षण संस्थान, सामुदायिक शिक्षा केंद्र और विश्वविद्यालय इस दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। सरकार ने प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान, डिजिटल इंडिया, कॉमन सर्विस सेंटर, स्वयं पोर्टल और विभिन्न कौशल विकास योजनाओं के माध्यम से महत्त्वपूर्ण प्रयास किए हैं, जिनसे लाखों महिलाओं को लाभ मिला है, लेकिन ये प्रयास अभी पर्याप्त नहीं हैं। आज आवश्यकता ऐसी रणनीति की है, जिसमें प्रत्येक ग्राम पंचायत में महिला डिजिटल शिक्षा केंद्र स्थापित हों।

स्कूल और कॉलेजों के साथ-साथ सार्वजनिक पुस्तकालयों को भी डिजिटल प्रशिक्षण केंद्र बनाया जाए। स्थानीय भाषा में प्रशिक्षण सामग्री विकसित की जाए। साइबर सुरक्षा का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाए, ताकि महिलाएं आत्मविश्वास के साथ डिजिटल माध्यमों का उपयोग कर सकें। स्वयं सहायता समूहों को ई-कॉमर्स और डिजिटल विपणन से जोड़ा जाए। वरिष्ठ महिलाओं, दिव्यांग महिलाओं और हाशिये पर रहने वाले समुदायों की महिलाओं के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाएं।

डिजिटल समावेशन केवल तकनीकी कार्यक्रम नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का अभियान है। जब एक महिला डिजिटल रूप से सशक्त होती है, तो उसका पूरा परिवार लाभान्वित होता है। वह बच्चों की शिक्षा, परिवार के स्वास्थ्य, वित्तीय प्रबंधन और सरकारी योजनाओं तक पहुंच में अधिक सक्षम बनती है। यही कारण है कि महिलाओं का डिजिटल सशक्तीकरण प्रत्यक्ष रूप से गरीबी उन्मूलन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य, आर्थिक विकास और लैंगिक समानता जैसे अनेक सतत् विकास लक्ष्यों को गति देता है।

भारत के विकसित राष्ट्र बनने का सपना तभी साकार होगा, जब देश की प्रत्येक महिला डिजिटल दुनिया की सक्रिय सहभागी बने। आजीवन शिक्षा इस परिवर्तन की सबसे प्रभावी कुंजी है। सरकार, शैक्षणिक संस्थानों, स्वैच्छिक संगठनों, स्थानीय निकायों और समाज को मिलकर ऐसा वातावरण तैयार करना होगा, जिसमें कोई भी महिला डिजिटल अवसरों से वंचित न रहे।

डिजिटल भारत की वास्तविक सफलता इंटरनेट की गति या तकनीक की उन्नति से नहीं, बल्कि इस बात से मापी जाएगी कि देश की अंतिम पंक्ति में खड़ी महिला भी डिजिटल संसाधनों का आत्मविश्वास के साथ उपयोग कर रही है या नहीं। अगर हम महिलाओं के डिजिटल समावेशन को आजीवन शिक्षा के साथ जोड़कर आगे बढ़ते हैं, तो यह केवल लैंगिक समानता की दिशा में ही नहीं, बल्कि समावेशी, न्यायपूर्ण और सतत् भारत के निर्माण की दिशा में भी एक ऐतिहासिक कदम सिद्ध होगा।

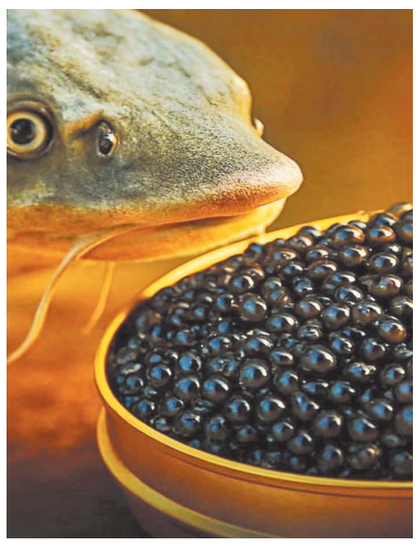

सिर्फ 1 चम्मच अंडों की कीमत लाखों रुपये

अल्मास कैवियार को दुनिया का सबसे महंगा फूड माना जाता है. अल्मास कैवियार ईरान की बेलुगा स्टर्जन मछली के अंडाशय से निकाले जाते हैं और यह दुर्लभ प्रजाति की मछली है. इसकी वजह से इसके एक चम्मच कैवियार की कीमत लाखों रुपये हो सकती है. नीलामी में कीमत करोड़ों तक पहुंच सकती है.

अल्मास कैवियार की कीमत लाखों रुपये होती है

जब भी महंगे फूड्स की बात होती है, तो अल्मास कैवियार को लिस्ट में टॉप पर रखा जाता है. अधिकतर लोग समझते हैं कि कैवियार मछली के अंडे होते हैं, लेकिन यह सच नहीं है. कुछ खास और दुर्लभ प्रजाति की मछलियों के अंडाशय से निकाले गए अंडों को ही कैवियार माना जाता है. जबकि सबसे महंगे अल्मास कैवियार ईरान की अल्बिनो स्टर्जन मछली से मिलते हैं और इनकी कीमत लाखों रुपये होती है. आपको जानकर हैरानी होगी कि अल्मास कैवियार की कीमत लाखों रुपये होती है, जिसकी वजह से इसे दुनिया का सबसे महंगा फूड माना जाता है. अल्मास कैवियार को सेहत के लिए बेहद चमत्कारी माना जाता है और यही वजह है कि यह रईसों की पसंद बनते जा रहे हैं. गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स की रिपोर्ट की मानें तो अल्मास को दुनिया का सबसे महंगा खाने का दर्जा प्राप्त है. अल्मास कैवियार ईरान की अल्बिनो स्टर्जन फिश के अंडाशय से निकाले जाते हैं और इनका रंग काला होता है. इसे ब्लैक गोल्ड भी कहा जाता है. आमतौर पर एक किलो अल्मास कैवियार की कीमत 34500 अमेरिकी डॉलर यानी करीब 29 लाख रुपये होती है. इस एक चम्मच कैवियार की कीमत एक लाख रुपये के आसपास होती है. अब सवाल है कि इसकी कीमत इतनी ज्यादा क्यों है? दरअसल अल्मास कैवियार अत्यधिक दुर्लभ प्रजाति की मछली अल्बिनो स्टर्जन से निकाले जाते हैं, जिसकी उम्र करीब 60 से 100 साल के बीच होती है. ये मछलियां कैस्पियन सागर के दक्षिणी हिस्से में पाई जाती हैं, जहां सबसे कम पॉल्यूशन होता है.

गिरगिट ही नहीं, ये जीव भी खतरा देखकर बदल लेते हैं रंग

कोई शिकारी को चकमा देने, कोई प्रेम होने पर बदलता है रंग

गिरगिट की तरह रंग बदलना, यह एक कहावत भी है क्योंकि गिरगिट अक्सर खतरा भांपकर अपना रंग बदलने में माहिर होते हैं। लेकिन ऐसे कुछ और जीव भी हैं, जो शिकारी को चकमा देने के लिए या अपने मूड के हिसाब से अपने शरीर का रंग बदल सकते हैं।

ट्री फ्रॉग: मौसम देख बदलता है रंग

पैसिफिक ट्री फ्रॉग रंग बदलने वाला एक जीव है, जो उत्तरी अमेरिका में पाया जाता है। ये मेंढक जैसे ही अपने आसपास कोई खतरा महसूस करता है, तो तुरंत अपना रंग बदल लेता है। ये मौसम के मुताबिक भी रंग बदलता रहता है। यह सांप को देखकर दो मिनट में रंग बदल लेता है।

सी-हॉर्स: सेकंड्स में बदल सकता है

सी-हॉर्स भी समुद्री जीवों की रंग बदलने वाली प्रजाति है। इनमें क्रोमेटेफोर्स नामक तत्व होता है, जो इन्हें तेजी से और कई तरह का रंग बदलने में मदद करता है। शिकारी सामने हो तो सी-हॉर्स कुछ सेकंड्स में रंग बदल लेते हैं, वहीं साथी से मिलन के दौरान रंग धीरे-धीरे बदलता है।

फ्लाउंडर मछली: आंखों से बदलती रंग

फ्लाउंडर मछली का रंग बदलना आंखों के जरिए होता है। फ्लाउंडर की आंखें भूरे के अलावा किसी भी दूसरे रंग को कैप्चर कर लेती हैं। आंखों से रंग कोशिकाओं को पहुंचाया जाता है और फिर

कोशिकाएं बाहरी त्वचा को उसी रंग में डाल लेती हैं। आंखों को नुकसान हो तो यह रंग नहीं बदल पाती।

गोल्डन टॉरटॉइज: छुने पर बदलता है रंग

यह भी तभी रंग बदलता है, जब कोई इंसान इसे छूने की कोशिश करे। आसपास की किसी चीज में यह घुल-मिल जाता है जैसे कोई फूल, पत्ती या फिर मिट्टी। अपने साथी से मिलते हुए इस बीटल का रंग बदलता है। वैसे ये सुनहरे रंग के होते हैं लेकिन खास हालातों में लाल चमकीले रंग के हो जाते हैं।

मिमिक ऑक्टोपस की लचीली स्किन

कई ऐसे समुद्री जीव भी हैं, जो रंग बदलने में माहिर होते हैं, इन्हीं में से एक है मिमिक ऑक्टोपस। ये बुद्धिमान जलीय जीव आमतौर पर प्रशांत क्षेत्र में पाए जाते हैं। ये किसी भी परिवेश में खुद को ढालने के लिए अपना रंग बदल लेते हैं। लचीली स्किन के कारण आकार भी बदल पाते हैं।

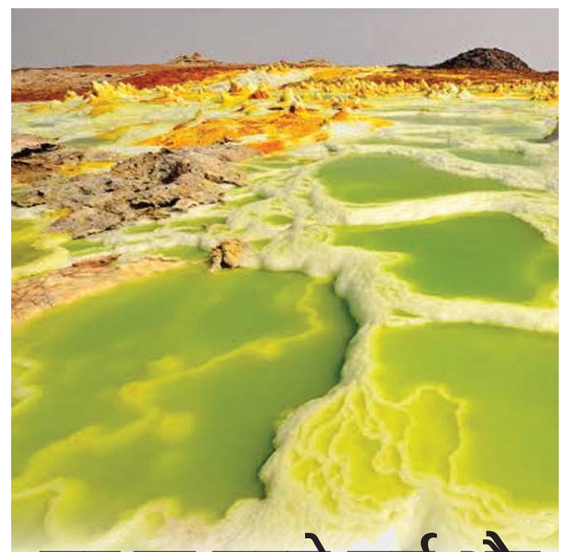

ग्रह पर सबसे गर्म और सबसे शुष्क स्थानों में से एक है, डानाकिल डिप्रेशन

ये आपके औसत रन-ऑफ़-द-मिल पूल नहीं हैं, ये वास्तव में एसिड पूल हैं। यहां तक कि ज़मीन जैसी दिखने वाली चीज़ें भी नमक और गंधक की भंगुर परतें हैं। पूरी तरह से पृथ्वी पर सबसे अजीब जगहों में से एक। डानाकिल डिप्रेशन के नीचे की टेक्टोनिक प्लेटें लाखों वर्षों के बाद भी हिलती रहती हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि यदि हलचल नहीं रुकी तो ज़मीन समुद्र तल से और भी नीचे चली जायेगी। क्या वह देखने लायक दृश्य नहीं होगा?

रंगों के एक अवास्तविक परिदृश्य में, जिसमें पीले और हरे रंग के चमकदार तालाबों का वर्चस्व है, उबलता गर्म पानी कड़ाही की तरह उबलता है, जबकि जहरीली क्लोरीन और सल्फर गैसें हवा को अवरुद्ध कर देती हैं।

नर्क का प्रवेश द्वार के रूप में जाना जाता है, इथियोपिया में डानाकिल डिप्रेशन अत्यधिक गर्म है और पृथ्वी पर सबसे अधिक विदेशी स्थानों में से एक है। फिर भी इस क्षेत्र में एक हालिया अभियान से पता चला है कि यह जीवन से भरपूर है।

हॉर्न ऑफ़ अफ़्रीका के मध्य में, डानाकिल डिप्रेशन दुनिया के सबसे दूरस्थ, दुर्गम और सबसे कम अध्ययन किए गए स्थानों में से एक है। यह उत्तर-पश्चिम इथियोपिया में एक ज्वालामुखी क्षेत्र में समुद्र तल से 330 फीट (100 मीटर) नीचे स्थित है, जो इरिट्रिया की सीमा के करीब है, जिसे उपयुक्त रूप से अफ़ार नाम दिया गया है। यह पूर्वी अफ्रीकी दरार प्रणाली का हिस्सा है, एक ऐसी जगह जहां पृथ्वी की आंतरिक ताकतें वर्तमान में तीन महाद्वीपीय प्लेटों को तोड़ रही हैं, जिससे नई भूमि बन रही है।

हिंसक परिदृश्य यकीनन ग्रह पर सबसे गर्म स्थान है, और सबसे शुष्क स्थानों में से एक है। तापमान नियमित रूप से 45ष्ट (113स्र) तक पहुँच जाता है। शायद ही कभी बारिश होती है, लेकिन परत की सतह के ठीक नीचे पिघले हुए मैग्मा का समुद्र रिसता है। दो अत्यधिक सक्रिय ज्वालामुखी हैं- उनमें से एक, एर्टा एले, उन मुट्ठी भर ज्वालामुखियों में से एक है जिसके शिखर पर एक सक्रिय, बुदबुदाती लावा झील है। यह क्षेत्र एसिड तालाबों और गीजर से भी भरा हुआ है, और इसमें एक गहरा गड्ढा है जिसे डेलोल कहा जाता है।

इन 'शादीशुदा चट्टानों' के सामने जीवनभर साथ रहने की कसमें खाते हैं कपल्स

दुनियाभर में कई ऐसी जगहें हैं जिन्हें पवित्र माना जाता है। ऐसी ही एक जगह है जापान का मेओटो इवा, द वेडेड रॉक्स। वेडेड रॉक्स या मेओटो इवा जापान में दो पवित्र चट्टानें हैं और इन्हें हसबैंड एंड वाइफ रॉक्स या मैरिड रॉक्स के नाम से भी जाना जाता है। ये चट्टानें प्रेम, स्त्री-पुरुष के मिलन और सुखी पारिवारिक जीवन का प्रतीक मानी जाती हैं। कपल्स इन चट्टानों को पवित्र मानते हैं और इनके सामने ही शादी करते हैं। इन चट्टानों के सामने कपल्स जीवनभर साथ रहने की कसमें खाते हैं। ये दोनों चट्टानें जापानी शहर फुतामी के पास समुद्र में स्थित हैं।

यह बड़ी चट्टान 9 मीटर ऊंची है और इसकी परिधि लगभग 40 मीटर है। इसका नाम इज़ानागी है, और यह एक पति का प्रतीक है, जिसके शिखर पर एक छोटा सा शिंटो टोरी गेट है। इस चट्टान के दाहिनी ओर इज़ानामी नाम की 3.6 मीटर ऊंची चट्टान है, जो लगभग 9 मीटर गोल है। इसे एक पत्नी के रूप में दर्शाया गया है। दोनों चट्टानें रस्सियों से जुड़ी हुई हैं और विवाहित बताई जाती हैं। दो चट्टानें शिमेनावा रस्सी से जुड़ी हुई हैं, जो आध्यात्मिक और सांसारिक क्षेत्रों के बीच विभाजन का प्रतीक है। यह रस्सी शिमेनावा नामक चावल के डंठल से बनी होती है, जिसका वजन लगभग एक टन होता है और इसे साल में तीन बार मई, सितंबर और दिसंबर में आयोजित एक विशेष समारोह में बदला जाता है।

फेहर्मनबेल्ट - दुनिया की सबसे लंबी अंडरवॉटर रेल- रोड टनल

डेनमार्क से जर्मनी पहुंचेंगे महज 7 मिनट में

यूरोपीय देश डेनमार्क व जर्मनी के बीच दुनिया की सबसे लंबी इर्मस्ड टनल बनाई जा रही है। इस टनल का नाम फेहर्मनबेल्ट टनल है। यह टनल दुनिया की सबसे लंबी रोड व ट्रेन टनल होगी। इस टनल को बाल्टिक सागर के नीचे बनाया जा रहा है। इस टनल के बनने से इन दोनों देशों के बीच का सफर बहुत ही आसान हो जाएगा। यह प्रोजेक्ट यूरोप के सबसे बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट में से एक है। हाल ही में डेनमार्क के राजा ने इसके एक खंड का उद्घाटन किया है। टनल को फेमर्न नामक कंपनी बना रही है।

2029 में होगी टनल तैयार

इस टनल की लंबाई करीब 18 किलोमीटर होगी। इसे पानी की सतह से करीब 40 मीटर नीचे बनाया जा रहा है। फिलहाल यहां से डेनमार्क जर्मनी जाने के लिए फेरी की मदद लेनी पड़ती है। इसमें 45 मिनट का समय लगता है। टनल के बनने के बाद यह दूरी रेल से 7 मिनट में व कार से 10 मिनट में पूरी की जा सकेगी। टनल से मध्य यूरोप में रेल व सड़क कनेक्टिविटी बढ़ जाएगी। टनल को बनाने के लिए दोनों देशों के बीच सहमति साल 2008 में ही बन गई। लेकिन दोनों देशों से मंजूरी मिलने व यूरोपीय यूनियन के कानूनों की वजह से डेनमार्क की ओर से साल 2020 में व जर्मनी की ओर से साल 2021 में काम शुरू हुआ। साल 2029 तक इस टनल के बनकर तैयार होने का दावा किया जा रहा है। टनल के निर्माण में करीब 3 लाख 60 हजार टन सरिये की जरूरत होगी, यह मात्रा एफिल टावर के मेटल स्ट्रक्चर के वजन का 50 गुना है। इस टनल को प्री बिल्ट टनल सेक्शन तकनीक से बनाया जा रहा है। टनल बनाने के लिए 711 फीट लंबे और 138 फीट चौड़े 79 स्टैंडर्ड व 10 स्पेशल ब्लॉक्स बनाए जा रहे हैं। इन सेक्शन को फैक्ट्री में बनाया जा रहा है। वहां से क्रेन व बोटस की मदद से बाद में इन्हें पानी में इंस्टॉल किया जा रहा है। पानी में ब्लॉक्स इंस्टॉल करने के बाद इनके इंटीरियर, कैमरा, लाइट्स, कम्युनिकेशन सिस्टम, वेंटिलेशन और रेलवे ट्रैक बिछाने आदि का काम किया जाता है। इस टनल को 120 सालों तक इस्तेमाल किया जा सकेगा। इस टनल के निर्माण में करीब 59 हजार करोड़ रुपए खर्च किए जा रहे हैं।

जयकारों और पुष्पवर्षा से गूंजा रायसिंहनगर,गुरु रविदास के पवित्र कलश का हुआ भव्य अभिनंदन

रायसिंहनगर(सुखदीप सिंह)। संत शिरोमणि गुरु रविदास की 650वीं जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में निकाली जा रही समरसता संकल्प कलश वंदन यात्रा सोमवार को रायसिंहनगर पहुंची। यात्रा के शहर में प्रवेश करते ही श्रद्धालुओं और सामाजिक संगठनों में उत्साह देखने को मिला। शहर के विभिन्न स्थानों पर लोगों ने पुष्पवर्षा कर पवित्र कलश का श्रद्धापूर्वक अभिनंदन किया। गुरु रविदास के जयकारों से शहर का वातावरण भक्तिमय हो गया। कलश वंदन यात्रा का शुभारंभ संस्कृत महाविद्यालय से हुआ। यहां डॉ. सज्जन कुमार के सानिध्य में विधिवत पूजा-अर्चना एवं मंत्रोच्चारण किया गया। इसके बाद पवित्र कलश श्रीगंगानगर लोकसभा यात्रा प्रभारी एवं पूर्व विधायक बलवीर सिंह लूथरा को सौंपा गया। कलश प्राप्त करने के बाद यात्रा शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए आगे बढ़ी। यात्रा में शामिल श्रद्धालुओं ने गुरु रविदास के विचारों और उनके सामाजिक समरसता के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया। यात्रा के मार्ग में विभिन्न सामाजिक संगठनों, स्थानीय नागरिकों और श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक स्वागत किया। कई स्थानों पर यात्रा पर पुष्पवर्षा की गई और पवित्र कलश का अभिनंदन किया गया। यात्रा के दौरान लोगों में गुरु रविदास के प्रति श्रद्धा और उत्साह नजर आया। श्रद्धालुओं ने सामाजिक एकता, भाईचारे और समानता को मजबूत करने का संदेश दिया। शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए कलश यात्रा गुरु रविदास गुरुद्वारा पहुंची, जहां श्रद्धालुओं की ओर से अरदास की गई। गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की ओर से संगत के लिए लंगर की व्यवस्था की गई। श्रद्धालुओं ने गुरुद्वारा साहिब में शीश नवाकर गुरु रविदास के आदर्शों को जीवन में अपनाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में पूर्व विधायक लालचंद मेघवाल,पालिका निवर्तमान अध्यक्ष मनीष मोहन कौशल,मेडिकल यूनियन के जिलाध्यक्ष भाजपा नेता राधेश्याम भाकर,रविदास गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान अजीत सिंह,भाजपा जिला महामंत्री सुरेंद्र गोदारा सहित अनेक गणमान्य नागरिक, सामाजिक कार्यकर्ता और श्रद्धालु मौजूद रहे। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि संत गुरु रविदास ने समाज को समानता, समरसता, भाईचारे और मानवता का संदेश दिया। उन्होंने समाज में व्याप्त भेदभाव और ऊंच-नीच की भावना को समाप्त कर सभी वर्गों को समान दृष्टि से देखने की प्रेरणा दी। वक्ताओं ने कहा कि आज के समय में गुरु रविदास के विचार समाज को एकजुट करने और आपसी भाईचारा मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उनके बताए मार्ग पर चलते हुए समाज में समानता और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देना प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगों ने गुरु रविदास के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने और उनके समरसता, समानता एवं भाईचारे के संदेश को आगे बढ़ाने का संकल्प दोहराया।

भाजपा किसान मोर्चा जिला महामंत्री ने नवनियुक्त प्रदेश पदाधिकारियों का किया जोरदार अभिनंदन

द सांध्यदीप नेटवर्क, श्रीगंगानगर। भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा राजस्थान द्वारा पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष आत्माराम तरड़ को भाजपा किसान मोर्चा का प्रदेश उपाध्यक्ष तथा किसान मोर्चा जिला अध्यक्ष सतपाल कासनियां को राज्य कार्यकारिणी का सदस्य मनोनीत करने पर पार्टी कार्यकर्ताओं द्वारा जोरदार अभिनंदन किया गया। नई धान मण्डी स्थित किसान मोर्चा के जिला महामंत्री शरद अग्रवाल के कार्यालय में सोमवार सांय स्वागत-अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में जिला महामंत्री शरद अग्रवाल सहित पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने नवनियुक्त प्रदेश पदाधिकारियों को फूलमालाएं पहनाकर एवं शॉल ओढ़ाकर उनका जोरदार स्वागत किया।कार्यक्रम के जिला महामंत्री शरद अग्रवाल व कार्यकर्ताओं ने भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़, किसान मोर्चा प्रदेशाध्यक्ष कैलाश चौधरी सहित राष्ट्रीय एवं प्रदेश नेतृत्व का आभार व्यक्त करते हुए विश्वास जताया कि इन नियुक्तियों से प्रदेश भर में किसानों के मुद्दों को मजबूती मिलेगी तथा किसान मोर्चा का संगठन धरातल पर और अधिक सशक्त होगा।

रायसिंहनगर : ट्रेन की चपेट में आने से व्यक्ति की मौत

रायसिंहनगर(सुखदीप सिंह)। रायसिंहनगर क्षेत्र में सोमवार एक दर्दनाक हादसे में ट्रेन की चपेट में आने से 51 वर्षीय व्यक्ति की मौत हो गई। हादसा रायसिंहनगर से करीब तीन किलोमीटर आगे गजसिंहपुर रेल मार्ग पर 69 आरबी के निकट हुआ। हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। ट्रेन के पायलट ने तत्काल ट्रेन रोककर गंभीर रूप से घायल व्यक्ति को ट्रेन से ही गजसिंहपुर अस्पताल पहुंचाया, जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई।

जानकारी के अनुसार सोमवार सुबह करीब 9 बजे कोटा-श्रीगंगानगर एक्सप्रेस रायसिंहनगर से गजसिंहपुर की ओर जा रही थी। इसी दौरान 69 आरबी के पास एक व्यक्ति अचानक ट्रेन की चपेट में आ गया। ट्रेन की टक्कर से वह गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसे के बाद ट्रेन के पायलट ने तत्परता दिखाते हुए ट्रेन रोक दी और घायल व्यक्ति को ट्रेन के माध्यम से गजसिंहपुर ले जाया गया। वहां उसे अस्पताल में भर्ती करवाया गया, लेकिन चिकित्सकों के प्रयासों के बावजूद उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई।

मृतक की पहचान मनदीप सिंह पुत्र बलदेव सिंह कंबोज, निवासी 6 टीके, रायसिंहनगर के रूप में हुई है। घटना की सूचना मिलने पर रायसिंहनगर थाना पुलिस मौके पर पहुंची। सहायक उप निरीक्षक गुरदेव सिंह पुलिस दल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और हादसे से संबंधित जानकारी जुटाई।

पुलिस के अनुसार मृतक के पुत्र अमृतपाल ने रायसिंहनगर थाने में मर्ग रिपोर्ट दर्ज करवाई है। रिपोर्ट में बताया गया कि उसके पिता मानसिक रूप से परेशान रहते थे और सोमवार सुबह बिना किसी को बताए घर से घर से निकल गए थे। कुछ समय बाद परिजनों को उनके ट्रेन की चपेट में आने की जानकारी मिली।

पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करवाने के बाद परिजनों को सौंप दिया। पुलिस ने मर्ग दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

तिरंगे के सम्मान में निकाली भव्य बाइक रैली, युवाओं ने दिया देशभक्ति का संदेश

झुंझुनूं (सुरेन्द्र सिंह)। हर घर तिरंगा अभियान के तहत सोमवार को जिला प्रशासन की ओर से झुंझुनूं में भव्य बाइक तिरंगा यात्रा निकाली गई। नगर परिषद परिसर से शुरू हुई रैली को झुंझुनूं विधायक राजेंद्र भांबू, उपखंड अधिकारी रामकरण सिंह एवं नगर परिषद आयुक्त राकेश ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

रैली में बड़ी संख्या में युवा, अधिकारी-कर्मचारी और शहरवासी बाइक पर सवार होकर हाथों में तिरंगा लेकर शामिल हुए। तिरंगा यात्रा नगर परिषद परिसर से रवाना होकर शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए कलेक्ट्रेट परिसर पहुंची। इस दौरान बाइक सवारों के हाथों में लहराते तिरंगे और देशभक्ति के नारों से पूरा शहर देशभक्ति के रंग में नजर आया।

यात्रा के दौरान अधिकारियों ने युवाओं और आमजन को राष्ट्रीय ध्वज के महत्व के बारे में जानकारी दी। विधायक राजेंद्र भांबू ने कहा कि आज की युवा पीढ़ी को तिरंगे के इतिहास, उसके महत्व और उसके सम्मान के बारे में जानकारी होना बेहद जरूरी है। देश को आजादी दिलाने के लिए

स्वतंत्रता सेनानियों और हमारे पूर्वजों ने अपना जीवन समर्पित किया और अनेक बलिदान दिए।

उन्होंने कहा कि तिरंगा केवल एक ध्वज नहीं, बल्कि देश की एकता, अखंडता, स्वाभिमान और गौरव का प्रतीक है। हर नागरिक का दायित्व है कि वह राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान करे और देश के प्रति अपने कर्तव्यों को समझें।

बाइक तिरंगा यात्रा में नगर परिषद आयुक्त सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी-कर्मचारी भी शामिल हुए। युवाओं में रैली को लेकर खासा उत्साह दिखाई दिया। शहर के प्रमुख मार्गों से गुजरती तिरंगा यात्रा को देखकर आमजन भी देशभक्ति के रंग में रंगे नजर आए। हर हाथ में तिरंगा और हर दिल में देशभक्ति का संदेश देते हुए रैली ने हर घर तिरंगा अभियान को जन-जन तक पहुंचाने का संदेश दिया।

एकादशी पर श्रीश्याम चौक पर भजन संध्या

द सांध्यदीप नेटवर्क, श्रीगंगानगर। श्याम सेवा समिति श्रीश्याम चौक द्वारा नियमित एकादशी अरदास भजन संध्या एकादशी रात्रि 9 बजे से संपन्न हुई स`वादार प.विकास धेरड़ ने बताया कि एकादशी पर श्रीश्याम चौक पर एकादशी के पावन दिन वृक्षारोपण कार्य क्रम रहा जिसमें श्याम चौक पर कदम व नीम पीपल अन्य पौधे लगाए सेवादार विकास धेरड़, धर्मेन्द्र शर्मा, महावीर गोयल रामकुमार ज्यानी सहयोग रहा। रात्रि में श्याम चौक पर महेंद्र कुमार जी निवास पर एकादशी कीर्तन सम्पन्न हुआ जिसमें भव्य श्रृंगार कर बाबा को फूलों से सजाया गया विधि विधान से पंडित ने द्वारा पूजा अर्चना के बाद भजन प्रवाहक , बलजीत लखा,शारदा देवी, सरोज देवी रमन वर्मा, पंकज वर्मा ने भजनों की गंगा बहाई इस पावन अवसर पर भक्तों ने फल, मेवा,चॉकलेट, पान,टॉफी, मिठाइयों का भोग लगा भक्तों में बांटा गया। श्रीश्याम चौक जनकल्याण हेतु नियमित एकादशी इच्छापूर्ण कीर्तन में दर्शन कर धार्मिक जनों ने बाबा का पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

इस अवसर पर श्रीश्याम चौक मोहल्ले वासी व में धार्मिक जनों ने बाबा का इच्छापूर्ण आशीर्वाद प्राप्त किया।

करणीजी वितरिका के पुनरुद्धार कार्य का अधीक्षण अभियंता ने किया औचक निरीक्षण

श्रीगंगानगर। जल संसाधन विभाग के अधीक्षण अभियंता संजीव वर्मा ने सोमवार को जायका पोषित राजस्थान जल क्षेत्र आजीविका सुधार परियोजना के अंतर्गत प्रगतिरत करणीजी वितरिका के पुनरुद्धार कार्य का औचक निरीक्षण किया।

योजना के तहत करणीजी वितरिका के 23 किलोमीटर से 39 किलोमीटर तक 19.71 करोड़ रुपये की लागत से पीसीसी ब्लॉक लाइनिंग का कार्य करवाया जा रहा है। इस पुनरुद्धार कार्य से करणीजी वितरिका के 8,095 हेक्टेयर सिंचित क्षेत्र के लगभग 32,542 कृषक लाभान्वित होंगे। साथ ही, श्रीविजयनगर से करणीजी वितरिका के अंतिम छोर तक निर्धारित मात्रा के अनुसार पानी का प्रवाह सुचारू रूप से सुनिश्चित हो सकेगा।

निरीक्षण के दौरान अधीक्षण अभियंता वर्मा ने पीसीसी ब्लॉक निर्माण कैंप का जायजा लिया। उन्होंने कैंप प्रभारी को पीसीसी ब्लॉक का निर्माण निर्धारित मापदंडों एवं गुणवत्तापूर्ण तरीके से सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने निर्माण सामग्री एवं कार्य की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने के साथ निर्धारित तकनीकी मानकों का पूर्ण पालन करने के लिए निर्देशित किया।

इसके पश्चात अधीक्षण अभियंता द्वारा करणीजी वितरिका के 24.600 किलोमीटर से 24.800 किलोमीटर तक चल रहे निर्माण कार्य का निरीक्षण किया गया। मौके पर उपस्थित अधिशासी अभियंता युगराज सिंह एवं सहायक अभियंता संदीप यादव को लाइनिंग कार्य निर्धारित मापदंडों के अनुरूप करवाने के निर्देश दिए गए।

साथ ही निर्माण कार्य के दौरान पर्याप्त एवं समुचित तराई तथा निर्माण सिंचन सुनिश्चित करने के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए गए। अधीक्षण अभियंता ने अधिकारियों एवं संबंधित कार्मिकों को कार्य की गुणवत्ता बनाए रखते हुए निर्धारित समय-सीमा में निर्माण कार्य पूर्ण करने तथा किसानों को परियोजना का अपेक्षित लाभ सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

युवा कांग्रेस का हल्ला बोल प्रदर्शन

श्रीगंगानगर। भारतीय युवा कांग्रेस जिलाध्यक्ष करण सहारण के नेतृत्व में सैंकड़ों पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं द्वारा सोमवार को श्रीगंगानगर जिले में गहराते सिंचाई व दूषित पेयजल तथा तेजी से फैलते अवैध नशे के विरोध में जिला कलेक्ट्रेट का घेराव व हल्ला बोल प्रदर्शन किया गया। कोडा चौक स्थित मोती पैलेस युवा कांग्रेस कार्यालय के समीप एकत्रित होकर जिले भर से आए किसानों, युवाओं तथा पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने नारेबाजी करते हुए कलेक्ट्रेट तक पैदल आक्रोश मार्च निकाला।

प्रदर्शन का नेतृत्व करते हुए युवा कांग्रेस जिलाध्यक्ष करण सहारण ने कहा कि जिले के किसान लंबे समय से भाखड़ा, इंदिरा गांधी तथा गंगनहर में पर्याप्त सिंचाई पानी की उपलब्धता व रोटेशन व्यवस्था सुचारू रखने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि पंजाब की फैक्ट्रियों का औद्योगिक अपशिष्ट व दूषित केमिकल नहरों के माध्यम से श्रीगंगानगर आ रहा है, जिससे आमजन को मिलने वाला पेयजल स्वास्थ्य के लिए अत्यंत घातक हो चुका है। उन्होंने नहरों में समय पर निर्धारित पानी उपलब्ध कराने, पानी चोरी पर प्रभावी रोक

लगाने, क्षतिग्रस्त नहरों की अविलंब मरम्मत करने, नहरों में औद्योगिक केमिकल गिराने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने तथा शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ एवं फिल्टर पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने की पुरजोर मांग की।

जिलाध्यक्ष करण सहारण ने सीमावर्ती क्षेत्र में पांव पसार रहे चिट्टा, हेरोइन तथा अन्य अवैध नशीली दवाओं के कारोबार पर पूर्णतया रोक लगाने की मांग करते हुए कहा कि अवैध नशा युवाओं के भविष्य को अंधकार में धकेल रहा है, जिसे रोकने हेतु शिक्षण संस्थानों के आसपास पुलिस गश्त बढ़ाई जाए तथा सरकारी नशामुक्ति एवं पुनर्वास केन्द्रों की संख्या में वृद्धि की जाए। प्रदर्शन के दौरान पुलिस द्वारा किए गए हल्के बल प्रयोग में कई पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के चोटिल होने पर जिलाध्यक्ष करण सहारण ने आक्रोश व्यक्त करते हुए प्रशासन की कार्यशैली पर सवाल उठाए।

केंद्र सरकार की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ श्रीगंगानगर में मजदूरों-किसानों ने दी गिरफ्तारी

द सांध्यदीप नेटवर्क, श्रीगंगानगर। केंद्रीय श्रम संगठनों, संयुक्त किसान मोर्चा तथा खेत मजदूर संगठनों के संयुक्त आह्वान पर आयोजित देशव्यापी गिरफ्तारी कार्यक्रम के तहत सोमवार को श्रीगंगानगर में लगभग 1500 से अधिक सीटू से संबंधित मजदूरों, नरेगा में काम करने वाली महिला श्रमिकों तथा किसानों ने अपनी विभिन्न मांगों को लेकर गिरफ्तारी दी। सीटू जिला सचिव का. जगसीर सिंह भट्टी ने बताया कि इस देशव्यापी आंदोलन के तहत सीटू तथा सम्बद्ध यूनियनों के कार्यकर्ता, श्रमिक व किसान नेहरू पार्क में एकत्रित हुए, जहाँ एक विशाल आम सभा का आयोजन किया गया।

आम सभा को संबोधित करते हुए सीटू के प्रदेश महासचिव का. वी.एस. राणा, खेत मजदूर यूनियन के राज्य अध्यक्ष का. दुर्गा स्वामी, किसान सभा के जिला अध्यक्ष का. गुरचरण सिंह मोड़, सीपीएम के जिला सचिव का. वकील सिंह, सीटू के जिला अध्यक्ष का. मोहनलाल, महामंत्री का.

हरकेवलदीप सिंह, सचिव का. जगसीर सिंह भट्टी तथा लोडिंग-अनलोडिंग यूनियन के नेता का. प्रकाश राव ने केंद्र सरकार की श्रमिक, किसान व जनविरोधी नीतियों की कड़े शब्दों में आलोचना की। वरिष्ठ अधिवक्ता का. भूरामल स्वामी, का. पालाराम, का. रविंद्र तरखान, का. गुरप्रीत सिंह, का. रोशन कुमार सिंह, का. नूर माही एवं का. सखी मोहम्मद आदि वक्ताओं ने केंद्र की मोदी सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि देश के मजदूरों तथा किसानों की मांगों को शीघ्र नहीं माना गया, तो आने वाले समय में सरकार को मजदूर-किसानों के व्यापक आक्रोश का सामना करना पड़ेगा।सीटू जिला सचिव का. जगसीर सिंह भट्टी ने बताया कि आम सभा के पश्चात् सैकड़ों की संख्या में मजदूर व किसान सरकार विरोधी नारे लगाते हुए जुलूस के रूप में जिला कारागार के समक्ष पहुंचे तथा अपनी गिरफ्तारी दी। इस दौरान प्रशासन द्वारा गिरफ्तारी हेतु बसों का समुचित प्रबंध किया गया था तथा कानून-व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से प्रशासन ने नेहरू पार्क को ही अस्थाई जेल घोषित किया। अस्थाई जेल में गिरफ्तार मजदूरों एवं किसानों की विधिवत सूची तैयार करने के पश्चात् उन्हें रिहा कर दिया गया।

दुख की घड़ी में सरकार बनी सहारा, पीड़ित परिवार को मिली 10 लाख की सहायता

हनुमानगढ़। अपनों को खोने का दर्द किसी भी परिवार के लिए असहनीय होता है। ग्राम इंद्रगढ़ में एक ही परिवार के तीन सदस्यों की आकस्मिक मृत्यु से परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा था। ऐसे कठिन समय में राज्य सरकार की मुख्यमंत्री आयुष्मान दुर्घटना बीमा योजना पीड़ित परिवार के लिए आर्थिक संबल बनी। योजना के तहत परिवार को 10 लाख रुपये की सहायता राशि प्राप्त हुई है।

3 फरवरी 2026 को ग्राम इंद्रगढ़ में हुई दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना में एक ही परिवार के गुरदीप सिंह पुत्र मेजर सिंह (40 वर्ष), लखविन्दर सिंह पुत्र गुरदीप सिंह (22 वर्ष) तथा राजविन्दर सिंह पुत्र गुरदीप सिंह (22 वर्ष) की पानी में डूबने से मृत्यु हो गई थी।

एक साथ परिवार के तीन सदस्यों को खोने से परिजनों पर गहरा दुख और संकट आ गया। इस मुश्किल घड़ी में प्रशासन ने

संवेदनशीलता के साथ प्रकरण को लिया और पीड़ित परिवार को राज्य सरकार की मुख्यमंत्री आयुष्मान दुर्घटना बीमा योजना का लाभ दिलाने के लिए आवश्यक दस्तावेजी एवं विभागीय कार्रवाई पूरी करवाई। पात्रता एवं आवश्यक औपचारिकताएं पूर्ण होने के बाद पीड़ित परिवार को योजना के तहत 10 लाख रुपये की सहायता राशि प्राप्त हुई। यह सहायता परिवार के लिए अपूरणीय क्षति की भरपाई तो नहीं कर सकती, लेकिन कठिन समय में आर्थिक सहारा जरूर बनी है।